29.0 आध्यात्मिकता व नैतिकता के एकीकरण के सन्दर्भ में रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान

- **ऐश्वर्या सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ.
  Email: aishwarya.ballia@gmail.com
- **डॉ आकांक्षा सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
  Email: singh_akanksha@gmail.com

शोध-सार

"आत्मानों मोक्षार्थं जगद् हिताय च", स्वयं के उद्धार के लिए तथा विश्व के कल्याण के लिए", आदर्श वाक्य के साथ रामकृष्ण मिशन एवं रामकृष्ण मठ की स्थापना की गई थी। इस आदर्श वाक्य को तैयार करने का श्रेय स्वामी विवेकानंद को जाता है। स्वामी विवेकानंद के गुरु रामकृष्ण परमहंस जी का कहना था कि, भगवान तक पहुंचने के हमारे रास्ते अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन अंत में सभी रास्ते भगवान तक ही पहुंचते है। उनका मानना यह भी था कि एक भक्त को बुरे विचारों से और बुरे आचरण से बचना चाहिए तभी वह ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सकता है। स्वामी विवेकानंद का उद्देश्य ऐसे साधुओं और संन्यासियों को संगठित करना था जो रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं में गहरी आस्था रखें, उनके उपदेशों को जनसाधारण तक पहुंचा सके और संतप्त दुखी एवं पीड़ित मानव जाति की निस्वार्थ सेवा कर सके। प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित शैक्षिक कार्यक्रमों का अध्ययन करना है तथा रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित विश्वविद्यालय का गहन अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग करते हुए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधियों का उपयोग किया गया है।

मुख्य शब्द - *रामकृष्ण मिशन, शैक्षिक कार्य, समग्र शिक्षा ।*

प्रस्तावना

रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन गैर-राजनीतिक और गैर-सांप्रदायिक आध्यात्मिक संगठन हैं जो एक सदी से भी अधिक समय से विभिन्न प्रकार की मानवीय, सामाजिक सेवा गतिविधियों में लगे हुए हैं। रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन कानूनी और आर्थिक रूप से अलग-अलग हैं, लेकिन वे आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं और उन्हें जुड़वां संगठन माना जाता है। रामकृष्ण मिशन एक पंजीकृत संस्था है, जिसके माध्यम से रामकृष्ण मठ के संन्यासी तथा गृहस्थ भक्त आपस में सहयोग के द्वारा मुख्यतः भारत में विभिन्न प्रकार की सामाजिक सेवाएं प्रदान करते हैं। इसकी स्थापना रामकृष्ण के प्रमुख शिष्य स्वामी विवेकानंद (1863-1902) ने की थी। यह दोनों संस्थाएं संपूर्ण मानव जाति के पुनरुत्थान हेतु, एक पंथनिरपेक्ष सार्वभौमिक आध्यात्मिक आंदोलन के द्वारा पिछले 100 से भी अधिक वर्षों से कार्य कर रही हैं। भारत का प्राचीन वेदांत दर्शन ही इस आंदोलन का मुख्य प्रेरणा स्रोत है। श्री रामकृष्ण ने इस प्राचीन वेदान्त विचारधारा को संगठित किया। स्वामी विवेकानंद ने इसे आधुनिक युग के लिए प्रयुक्त भाषा तथा शैली प्रदान की तथा जाति-पंथ तथा संप्रदाय से परे निरपेक्ष भाव से संपूर्ण विश्ववासियों के लिए सुलभ बनाया। (रामकृष्ण मठ एवं रामकृष्ण मिशन इतिहास, आदर्श गतिविधियां पृ. 3)

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

19वीं सदी के प्रारंभ में पाश्चात्य संस्कृति ने मानवीय बुद्धि तथा भौतिक विज्ञान के महिमा- मण्डन तथा अपने उत्साहपूर्ण धर्मांतरण के द्वारा भारतीय संस्कृति के समक्ष एक बड़ी चुनौती खड़ी कर दी थी। पाश्चात्य संस्कृति के व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा सामाजिक समानता आदि भौतिक आदर्श इस देश के बुद्धिजीवियों को आकृष्ट करने लगे। श्री रामकृष्ण तथा स्वामी विवेकानंद ने पाश्चात्य संस्कृति के श्रेष्ठ तत्वों को वेदांत में समाहित करके उसे नई चेतना प्रदान की। भौतिकवाद के आक्रमण से व नैतिक तथा आध्यात्मिक आदर्शों के क्षरण से पाश्चात्य जगत् भी घोर संकट का सामना कर रहा था । ऐसे समय में श्री रामकृष्ण और स्वामी विवेकानंद का जीवन तथा संदेश सारे विश्ववासियों के लिए महत्वपूर्ण हो उठा ।

रामकृष्ण परमहंस को 19वीं सदी के रहस्यवादी के रूप में माना जाता है। वे भिक्षुओं के संघ के प्रेरक थे और उन्हें रामकृष्ण आंदोलन का आध्यात्मिक संस्थापक माना जाता है। श्री रामकृष्ण दक्षिणेश्वर काली मंदिर में पुजारी थे और उन्होंने अनेक शिष्यों को आकर्षित किया। 1886 में, रामकृष्ण की मृत्यु के बाद, मठवासी शिष्यों ने बारनागोर में पहला मठ बनाया। बाद में, विवेकानंद एक घुमक्कड़ भिक्षु बन गए और वर्ष 1893 में आयोजित विश्व धर्म संसद में एक प्रतिनिधि के तौर पर शिकागो गए थे। अमेरिका की धर्म संसद में अपने भाषण की शुरुआत उन्होंने "अमेरिका की बहनों और भाइयों" से किया। उनका यह भाषण पूरे विश्व में प्रसिद्ध हुआ और उन्हें व्यापक मान्यता मिली। विवेकानंद अनेक यात्राओं पर गए और वहां पर हिंदू धर्म और आध्यात्मिकता पर अनेकों व्याख्यान एवं प्रवचन दिये। उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यूयॉर्क में पहली वेदांत सोसाइटी की स्थापना की। वे 1897 में भारत लौट आए और 1 मई 1897 ई. को रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। यद्यपि विवेकानंद एक हिंदू साधु थे और आधुनिक समय में पहले हिंदू मिशनरी के रूप में उनका स्वागत संपूर्ण भारतवासियों ने किया। उन्होंने अपने अनुयायियों को अपने विश्वास के प्रति सच्चे रहने और दुनिया के सभी धर्म का सम्मान करने के लिए प्रेरित किया।

विवेकानंद के अनुसार व्यक्ति को स्वयं आध्यात्मिक सत्य का अनुभव करना चाहिए और उसे सिखाए गए सिद्धांतों पर आंख मूंदकर विश्वास नहीं करना चाहिए। उसी वर्ष रामकृष्ण के शिष्य स्वामी अखंडानंद द्वारा सरगाची में अकाल राहत की शुरुआत की गई थी। रामकृष्ण के एक अन्य शिष्य स्वामी ब्रह्मानंद को पहला अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। 1902 ईस्वी में विवेकानंद की मृत्यु के बाद रामकृष्ण की आध्यात्मिक समकक्ष शारदा देवी ने एक नवजात मठवासी संगठन के सलाहकार प्रमुख के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रामकृष्ण मिशन के शैक्षणिक कार्य

रामकृष्ण मिशन एक प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित गैर-सरकारी संगठन है जो जाति, रंग, पंथ, धर्म, राष्ट्रीयता, लिंग, क्षेत्रीय पूर्वाग्रह आदि से ऊपर उठकर भारत और विदेशों में समाज की सेवा कर रहा है। शिक्षा, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गतिविधियों, स्वास्थ्य राहत और पुनर्वास, ग्रामीण और आदिवासी विकास, प्रकाशन, शिक्षण और उपदेश और बड़ी संख्या में संबद्ध क्षेत्रों में लगभग 200 शाखा केंद्रों का विशाल नेटवर्क है जो सभी व्यक्ति और समाज के समग्र विकास के लिए है। स्वामी विवेकानंद द्वारा दी गई विचारधारा, अर्थात, निःस्वार्थ सेवा ही मनुष्य में ईश्वर की वास्तविक पूजा है, स्वयं की मुक्ति के लिए और विश्व के कल्याण के लिए, के आधार पर रामकृष्ण मिशन 20वीं सदी के आरंभ में अपने स्थापना के बाद से समाज की सेवा निरंतर कर रहा है और अब यह स्वामी विवेकानंद द्वारा शुरू किया गया एक स्थापित और स्वीकृत धर्मार्थ, परोपकारी, गैर- लाभकारी, गैर सरकारी संगठन के रूप में माना जाता है। रामकृष्ण मिशन ने समाज के उत्थान में, विशेष रूप से भारत में, महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वंचितों को सशक्त बनाने, महिलाओं के स्थिति में सुधार लाने, अस्पृश्यता और अंधविश्वास से लड़ने तथा शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मिशन ने समाज पर एक अमिट छाप छोड़ी है। शिक्षा के प्रति मिशन की प्रतिबद्धता ने पूरे भारत में कई उल्लेखनीय शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना की है। रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित कुछ शैक्षिक संस्थानों का विवरण अग्रलिखित है-

- स्कूल :पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक स्तर, सामान्य शिक्षा प्रदान करते हैं।
- कॉलेज :डॉक्टरेट/पोस्ट-डॉक्टरेट स्तर पर उच्च शोध की सुविधाओं के साथ विज्ञान, मानविकी) भाषाओं सहित(, वाणिज्य और व्यवसाय-उन्मुख विषयों में स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा प्रदान करना।
- संस्कृत विद्यालय : माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर पर संस्कृत भाषा और साहित्य का ज्ञान प्रदान करते हैं।
- संस्कृत महाविद्यालय :स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर पर संस्कृत भाषा और साहित्य का ज्ञान प्रदान करते हैं।
- वैदिक विद्यालय : माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर पर वैदिक शिक्षा प्रदान करते हैं।

- भाषा विद्यालय :भारतीय और विदेशी भाषाओं में भाषा कौशल का ज्ञान प्रदान करते हैं।
- शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज/संस्था :डॉक्टरेट/पोस्ट-डॉक्टरेट स्तर पर शिक्षा में उच्च अनुसंधान की सुविधाओं के साथ, बुनियादी/स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।
- जूनियर तकनीकी और औद्योगिक स्कूल :माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर पर तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।
- पॉलिटेक्निक : डिप्लोमा स्तर पर इंजीनियरिंग की विभिन्न शाखाओं में तकनीकी शिक्षा प्रदान करते हैं।
- कृषि विद्यालय/संस्थान : डिप्लोमा स्तर पर कृषि और बागवानी में शिक्षा/प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।
- लाइब्रेरियनशिप प्रशिक्षण केंद्र : ग्रामीण प्रशिक्षुओं को लाइब्रेरियनशिप में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।
- ब्लाइंड बॉयज़ अकादमी और दृष्टिबाधित लोगों के लिए केंद्र :दृष्टिबाधित और दृष्टिबाधित लड़कों को सामान्य शिक्षा के साथ-साथ संगीत, कृषि और कई अन्य शिल्पों में प्रशिक्षण प्रदान करता है।
- कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र : स्कूल और कॉलेज के छात्रों को कंप्यूटर शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।
- ग्रामीण विकास/सामाजिक कार्यकर्ता प्रशिक्षण संस्थान : ग्रामीण विकास कार्यों के लिए शिक्षा प्रदान करते हैं।
- समाज कल्याण और एकीकृत ग्रामीण विकास संस्थान :प्रशिक्षण पाठ्यक्रम देने के अलावा अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययन और एकीकृत ग्रामीण विकास परियोजनाओं का संचालन करते हैं।
- अनौपचारिक शिक्षा केंद्र :साक्षरता और वयस्क शिक्षा प्रदान करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में आरकेएमवीईआरआई विश्व विद्यालय के विभागों का विवरण दिया गया है। आरकेएमवीईआरआई (राम कृष्ण मिशन विवेकानंद एजुकेशनल एवं रिसर्च इंस्टिट्यूट) एक अलग तरह का विश्वविद्यालय है, यह गणित, विज्ञान के साथ-साथ भारतीय विरासत से संबंधित विषयों में शिक्षा प्रदान करता है। यह 2005 में स्थापित हुआ और इसके परिसर चार स्थानों पर स्थित हैं: कोलकाता के पास बेलूर मठ (मुख्य परिसर और मुख्यालय), कोयंबटूर, नरेंद्रपुर (कोलकाता) और रांची। इसके प्रमुख स्कूल(संकाय) का विवरण इस प्रकार है-

स्कूल ऑफ़ इंडियन हेरिटेज -इस विभाग का उद्देश्य समकालीन परिप्रेक्ष्य में भारतीय विरासत के विभिन्न घटकों के अध्ययन को आगे बढ़ाना तथा बढ़ावा देना है और वर्तमान विश्व में इस अध्ययन से प्राप्त शिक्षाओं के व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर काम करना है। इसके अंतर्गत मुख्य रूप से संस्कृत भाषा और साहित्य के अध्ययन के साथ-साथ प्राचीन ग्रंथो के अध्ययन पर विशेष बल दिया जाता है। पाणिनी का व्याकरण और अद्वैत वेदांत शोध के प्रमुख क्षेत्र हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय आध्यात्मिक विरासत तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न पहलुओं पर प्रमाण पत्र प्रदान करने के पाठ्यक्रमों की श्रृंखला भी आयोजित की जाती है। स्कूल ऑफ़ इंडियन हेरिटेज के अंतर्गत एक विभाग है जो कि संस्कृति और दर्शनशास्त्र विभाग के नाम से संचालित है, जिसमे मुख्य रूप से संस्कृत भाषा और साहित्य के अध्ययन के साथ-साथ प्राचीन ग्रंथो के अध्ययन पर विशेष बल दिया जाता है। पाणिनि का व्याकरण और अद्वैत वेदांत शोध के प्रमुख क्षेत्र हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय आध्यात्मिक विरासत तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न पहलुओं पर प्रमाण पत्र प्रदान करने के पाठ्यक्रमों की श्रृंखला भी आयोजित की जाती।

स्कूल ऑफ़ मैथमेटिकल साइंसेज (गणितीय विज्ञान संकाय) का प्रमुख उद्देश्य स्नातक छात्रों को अपने करियर की शुरुआत से ही शोध से परिचित कराने का प्रयास किया जाने का है। वर्तमान परिदृश्य की बात करें तो भारत में मौलिक विज्ञान में ऐसे छात्रों की बेहद कमी है जो वर्तमान शोध के प्रति प्रेरित हो और जागरूक हो। अतः गणितीय विद्यालय का उद्देश्य ऐसे छात्रों का चयन करना

है, जो शोध कार्य के प्रति जागरूक हो क्योंकि तकनीकी रूप से योग्य वैज्ञानिक जनशक्ति विकसित करके राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है।

स्कूल ऑफ़ रूरल एंड एग्रीकल्चर डेवलपमेंट (कृषि एवं ग्रामीण विकास स्कूल) में उन विषयों में अध्ययन और शोध को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाता है जो सीधे आम आदमी विशेष रूप से भारत के ग्रामीण लोगों और जनजातियों को लाभ पहुंचाते हैं।

कृषि और ग्रामीण विकास स्कूल में तीन संकाय केंद्र है-

क. नरेंद्रपुर परिसर में कृषि एवं ग्रामीण विकास संकाय (एआरडी)

ख. रांची परिसर में कृषि, ग्रामीण और जनजातीय विकास संकाय (एआरटीडी)

ग. कोयंबटूर परिसर में कृषि, ग्रामीण और जनजातीय विकास संकाय (एआरटीडी)।

इन संकायों में डिप्लोमा से लेकर डॉक्टरेट तक की डिग्री प्रदान की जाती है। स्कूल दो कृषि विज्ञान केंद्र भी संचालित करता है, जो भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) द्वारा संबंधित जिलों में क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के लिए बनाई गई पहल है जो पश्चिम बंगाल के दो जिलों में स्थित है।

स्कूल ऑफ़ रिहैबिलिटेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज (पुनर्वास और खेल विज्ञान स्कूल) का प्रमुख उद्देश्य भारत के वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में अत्यधिक सामाजिक प्रासंगिकता वाले मुद्दों पर विशेष ध्यान देना है। यह विभिन्न प्रकार की विकलांगता वाले व्यक्तियों की समावेशिता का, और व्यक्तियों के सामंजस्यपूर्ण शारीरिक और मानसिक विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत है। पुनर्वास और खेल विज्ञान संकाय में तीन विभाग है, जो रामकृष्ण मिशन विवेकानंद एजुकेशनल एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट के दो परिसरों बेलूर परिसर और कोयंबटूर परिसर में फैले हुए हैं। तीन प्रमुख विभाग- विकलांगता प्रबंधन और विशेष शिक्षा संकाय, सामान्य अनुकूली शारीरिक शिक्षा और योग संकाय तथा खेल विज्ञान और योग विभाग तीनों मिलकर अलग-अलग कार्य करते हैं। विकलांगता प्रबंधन और विशेष शिक्षा संकाय विकलांग व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने और उन्हें दैनिक जीवन, शैक्षणिक और व्यावसायिक कौशल से युक्त करने की चुनौती पर ध्यान केंद्रित करता है, जो उन्हें योगदान देने वाले सदस्यों के रूप में समाज में एकीकृत करने में मदद करता है।सामान्य अनुकूली शारीरिक शिक्षा और योग संकाय का प्रमुख उद्देश्य शारीरिक गतिविधि और योग के माध्यम से व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास करना है और विकलांग व्यक्तियों की जरूरत को पूरा करने के लिए अनुकूलित शारीरिक गतिविधियां भी प्रदान करना है। खेल विज्ञान और योग विभाग शारीरिक गतिविधि और योग के अभ्यास के माध्यम से समग्र स्वास्थ्य को बढ़ाकर समाज की सेवा करना चाहता है। विभाग शिक्षण और अनुसंधान गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करता है तथा खिलाड़ियों को उत्कृष्टता प्राप्त करने में सहायता करने का प्रयास भी करता है।

स्कूल ऑफ़ एनवायरनमेंट एंड डिजास्टर मैनेजमेंट (पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन संकाय) व स्कूल ऑफ़ बायोलॉजिकल साइंसेज (जैविक विज्ञान स्कूल) क्रमशः पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन, एवं जैव- प्रौद्योगिकी, सूक्ष्म जीव विज्ञान, प्रतिरक्षा विज्ञान आदि के विशेष संदर्भ के साथ जैविक विज्ञान के विभिन्न पहलुओं में अध्ययन और अनुसंधान के लिए कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अपने स्थापना के बाद से ही रामकृष्ण मिशन औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ मनुष्य निर्माण और चरित्र निर्माण की शिक्षा भी प्रदान करता है। रामकृष्ण मिशन के कई शैक्षिक संस्थान है जो कि पूरे भारत ही नहीं अपितु अन्य कई देशों में भी में फैले हुए हैं। रामकृष्ण मिशन के कई शैक्षणिक संस्थान है, जिनमें स्कूल, कॉलेज, पुस्तकालय, छात्रगृह, सेवाश्रम, क्लिनिक, औषधालय और ग्रामीण विकास केंद्र शामिल है। रामकृष्ण मिशन अपने शैक्षिक संस्थानों के माध्यम से भारतीयों को अपने समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से परिचित कर रहा है तथा भारत के समृद्ध ज्ञान परंपरा को वर्तमान शिक्षा से जोड़ने के लिए भी प्रयासरत है। रामकृष्ण मिशन के शिक्षण संस्थानों में छात्रों को सद्भाव के बारे में बताया जाता है तथा छात्रों को राष्ट्रवाद की सच्ची

भावना को आत्मसात करने के लिए अभिप्रेरित किया जाता है। इन संस्थानों में नैतिक, आध्यात्मिक मूल्य, चरित्र -निर्माण, आध्यात्मिक अभिविन्यास इत्यादि पर विशेष बल दिया जाता है। वर्तमान में लागू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा के माध्यम से भारत के ज्ञान परंपरा को पुनः स्थापित करने पर विशेष जोर दे रही है, रामकृष्ण मिशन इस दिशा में पहले से ही कार्यरत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

एन0सी0एफ0. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।

सर्वभूतन्द, स्वामी. (2009). ग्रेट थिंकर्स ऑन रामकृष्णा- विवेकानन्द, रामकृष्ण मिशन इन्स्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता: इण्डिया।

ओड़, लक्ष्मीकान्त. (2010). शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठाभूमि, जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

निर्वेदानन्द, स्वामी. (2013, द्वितीय पुनर्मुद्रण). हमारी शिक्षा, रामकृष्ण मठ रामकृष्ण आश्रम मार्ग धन्तोली: नागपुर।

विवेकानन्द, स्वामी. (2014, सत्रहवॉ पुनर्मुद्रण). प्राच्य और पाश्चात्य, रामकृष्ण मठ रामकृष्ण आश्रम मार्ग धन्तोली: नागपुर।

एस0 शिवकुमार. (2014). ए स्टडी ऑफ दि कॉन्ट्रीव्यूशन ऑफ श्रीरामकृष्ण मिशन

विवेकानन्द, स्वामी. (2015, अठारहवॉ पुनर्मुद्रण). ज्ञानयोग, रामकृष्ण मठ रामकृष्ण आश्रम मार्ग धन्तोली: नागपुर।

विवेकानन्द, स्वामी. (2016, षष्ठ पुनर्मुद्रण). शिक्षा का आदर्श, रामकृष्ण मठ रामकृष्ण आश्रम मार्ग धन्तोली, नागपुर।

टुवर्ड एनारिचमेंट ऑफ सेकेन्ड्री एजूकेशन इन इंडिया सिन्स इट्स इन्सेप्सन अपटू (2005). शिक्षा विभाग: मैसूर विश्वविद्यालय।

द वेदान्ता केसरी. (2017). रामकृष्ण मिशन मठ, मिलापोर: चेन्नई।